ओहिणाणी असंखेज्जगुणा ॥ १५१ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? संखेज्जरूवगुणिदआवलियाए असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।

आभिणिबोहिय-सुदणाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया ॥१५२॥

को विसेसो ? ओहिणाणीणं असंखेज्जदिभागो ओहिणाणविरहिदतिरिक्खमणुस्ससम्माइट्ठिरासी ।

विभंगणाणी असंखेज्जगुणा ॥ १५३ ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलेहि ओवट्टिदजगपदरपमाणत्तादो ।

केवलणाणी अणंतगुणा ॥ १५४ ॥

मनःपर्ययज्ञानियोंसे अवधिज्ञानी जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १५१ ॥

गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल है, क्योंकि, वह संख्यात रूपोंसे गुणित आवलीके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित पल्योपमप्रमाण है ।

अवधिज्ञानियोंसे अभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी दोनों ही तुल्य होकर विशेष अधिक हैं ॥ १५२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? वह अवधिज्ञानियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण अवधिज्ञानसे रहित तिर्यंच व मनुष्य सम्यग्दृष्टिराशिके बराबर है ।

अभिनिबोधिक-श्रुतज्ञानियोंसे विभंगज्ञानी असंख्यातगुणे हैं ॥ १५३ ॥

गुणकार जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणियोंके बराबर है क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र प्रतरांगुलोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है ।

विभंगज्ञानियोंसे केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं १५४ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो ।

मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥ १५५ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहितो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? केवलणाणी ओवट्टिदे[1] देसूणसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

संजमाणुवादेण सव्वत्थोवा संजदा ॥ १५६ ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जा पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? संखेज्जरूवगुणिदअसंखेज्जावलिओवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ॥ १५८ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

केवलज्ञानियोंसे मतिअज्ञानि और श्रुताज्ञानी दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणे हैं ॥ १५५ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिकोंसे, सिद्धोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह केवलज्ञानियोंसे अपवर्तित कुछ कम सर्व जीवराशिप्रमाण है ।

संयममार्गणानुसार संयत जीव सबमें स्तोक हैं ॥ १५६ ॥

क्योंकि, वे संख्यात हैं ।

संयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १५७ ॥

गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पल्योपमके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है, क्योंकि, वह संख्यात रूपोंसे गुणित असंख्यात आवलियोंसे अपवर्तित पल्योपमप्रमाण है ।

संयतासंयत जीवोंसे न संयत न असंयत न संयतासंयत ऐसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १५८ ॥

---

1 म. प्रती ओवट्टिदे इति पाठः ।

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? असंखेज्जोवट्टिदसिद्धप्पमाणत्तादो।

असंजदा अणंतगुणा ॥ १५९ ॥

गुणगारो अणंताणि सव्वजीवपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सिद्धोवट्टिदवेसूणसव्वजीवरासित्तादो । अण्णेण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा ॥ १६० ॥

सुगमं ।

परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १६१ ॥

गुणगारो संखेज्जसमया ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १६२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा ॥ १६३ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह असंख्यातसे (संयत और संयतासंयतोंसे) अपवर्तित सिद्धराशिप्रमाण है ।

सिद्धोंसे असंयत जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १५९ ॥

गुणकार सब जीवोंके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण है, क्योंकि वह सिद्धोंसे अपवर्तित कुछ कम सर्व जीव राशिप्रमाण है । अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १६० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंसे परिहारशुद्धिसंयत संख्यातगुणे हैं ॥ १६१ ॥

गुणकार संख्यात समय है ।

परिहारशुद्धिसंयतोंसे यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १६२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय है ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंसे सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

संजदा विसेसाहिया ॥ १६४ ॥

सुगमं ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १६५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ॥ १६६ ॥

को गुणगारो ? पुव्वं परूविदो ।

असंजदा अणंतगुणा ॥१६७ ॥

सुगमं । संजमाहिट्ठिदजीवाणमप्पाबहुअं भणिय तिव्व-मंद-मज्झिमभेएण ट्ठिदसंजमस्स अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

---

गुणकार क्या है ? संख्यात समय है ।

उक्त दोनों जीवोंसे संयत जीव विशेष अधिक हैं ॥ १६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयतोंसे संयतासंयत असंख्यातगुणे हैं ॥ १६५ ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

संयतासंयतोंसे न संयत न असंयत न संयतासंयत ऐसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १६६ ॥

गुणकार क्या है ? पूर्वप्ररूपित (अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा) गुणकार है

उनसे असंयत जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है । संयमसे अधिष्ठित जीवोंके अल्पबहुत्वको कहकर तीव्र, मन्द व मध्यम भेदसे स्थित संयमके अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं--

---

१ मु. प्रतौ: संजमट्ठिद इति पाठः

सव्वत्थोवा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी ॥ १६८ ॥

एदं सव्वजहण्णं सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमस्स लद्धिट्ठाणं कस्स होदि ? मिच्छत्तं पडिवज्जमाणसंजदस्स चरिमसमए। एदं सव्वजहण्णं पडिवादट्ठाणमादि कादूण छवड्ढिक्कमेण असंखेज्जलोगमेत्तेसु सामाइयच्छेदोवट्ठावणलद्धिट्ठाणेसु गदेसु तदो परिहार-सुद्धिसंजदस्स पडिवादजहण्णलद्धिट्ठाणेण समाणं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं होदि। तदो दोण्हं संजमाणं ठाणाणि छवड्ढीए णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि संजमलद्धि-ट्ठाणाणि गंतूण परिहारसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणमुक्कस्सं होदि। तदो तेसु तत्थेव थक्केसु पुणो उवरि णिरंतरछवड्ढिकमेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमलद्धि-ट्ठाणाणि गच्छंति। तदो असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि अंतरिदूण सुहुमसांपराइय-सुद्धिसंजमस्स जहण्णं पडिवादलद्धिट्ठाणं होदि। तदो अणंतगुणाए वड्ढीए सुहुमसांप-राइयसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तं गंतूण थक्कंति। किमट्ठमेदाणि अंतोमुहुत्त-

---

सामायिक-छेदोपस्थापनशुद्धिसंयतकी जघन्य चरित्रलब्धि सबसे स्तोक है ॥ १६८ ॥

शंका—सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमका यह सबसे जघन्य लब्धिस्थान किसके होता है ?

समाधान—यह स्थान मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले संयतके अन्तिम समयमें होता है।

इस सबसे जघन्य प्रतिपातस्थानसे लेकर षड्वृद्धिक्रमसे असंख्यात लोकमात्र सामायिक-छेदोपस्थापनालब्धिस्थानोंके व्यतीत होनेपर पश्चात् परिहारशुद्धिसंयतके प्रतिपात जघन्य लब्धिस्थानके समान सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयम लब्धिस्थान होता है। तत्पश्चात् दोनों संयमोंके स्थान छह वृद्धियोंके क्रमसे निरन्तर असंख्यात लोकप्रमाण संयमलब्धिस्थानोंको बिताकर उत्कृष्ट परिहारशुद्धिसंयमलब्धिस्थान होता है। पश्चात् उनके वहींपर विश्रान्त होनेपर पुनः आगे निरन्तर छह वृद्धियोंके क्रमसे असंख्यात लोकप्रमाण सामायिकछेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमलब्धिस्थान जाते हैं। तत्पश्चात् असंख्यातलोक प्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमका जघन्य प्रतिपात लब्धिस्थान होता है। पश्चात् अनन्तगुणित वृद्धिसे सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमल-ब्धिस्थान अन्तर्मुहूर्त जाकर स्थगित हो जाते हैं।

शंका—ये सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमलब्धिस्थान अन्तर्मुहूर्तप्रमाण किस

मेत्ताणि? सगद्धाए पढमादिसमएसु ट्ठिदाणं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं समाणकालाणं विसरिसपरिणामाभावादो। तदो असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूण जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं णिव्वियप्पत्तादो अजहण्णमणुक्कस्समेक्कं चेव होदि। तेसिं संदिट्ठी एसा ०० ००००००००००००००००००००००००००००००००००००००० अंतरं। एत्थ उवरिमपंती सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं, हेट्ठिमा परिहारसुद्धिसंजमस्स ००००००००००० ००००००००००००००००००००००००००० अंतरं। एसा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणाणं पंत्ती। अ। एवं जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं। एत्थ सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमाणं जहण्णचरित्तलद्धिट्ठाणं सव्वसंकिलिट्ठसामाइयछेदोवट्ठावणमिच्छत्ताभिमुहचरिमसमयसंजदस्स वुत्तं। तं संदिट्ठीए पढमसुण्णं त्ति घेत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १६९ ॥

कुदो? जहण्णचरित्तलद्धिट्ठाणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण-

---

किये हैं?

समाधान—क्योंकि, अपने अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालके प्रथमादि समयोंमें स्थित समानकालवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंके विसदृश परिणामोंका अभाव है।

तत्पश्चात् असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमलब्धिस्थान निर्विकल्प होनेसे जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित एक ही होता है। संयमोंकी संदृष्टि यह है ००० ००० अन्तर। यहां उपरिम पंक्ति सामायिकछेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमोंकी और अधस्तन पंक्ति परिहारशुद्धिसंयमकी है ००००००००० ००००००००००००००००००००००००००००००० अन्तर। यह सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमलब्धिस्थानोंकी पंक्ति है। अ। यह यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमलब्धिस्थान है। यहां सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमोंका जघन्य चारित्रलब्धिस्थान सर्वसंक्लिष्ट मिथ्यात्वाभिमुख हुए सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतके अन्तिम समयमें होता है। इसे संदृष्टिमें प्रथम शून्य ग्रहण करना चाहिये।

परिहारशुद्धिसंयतकी जघन्य चारित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १६९ ॥

क्योंकि, वह जघन्य चारित्रलब्धिस्थानसे ऊपर असंख्यात लोकमात्र छह स्थान

प्पत्तीए। एसा परिहारसुद्धिसंजमलद्धी जहण्णिया कस्स होदि ? सव्वसंकिलिट्ठस्स सामाइयछेदोवट्ठावणाभिमुहचरिमसमयपरिहारसुद्धिसंजदस्स[1] ।

तस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७० ॥

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्पत्तीए ।

सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदस्स उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७१ ॥

कुदो ? तत्तो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमस्स उक्कस्सलद्धीए समुप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? चरिमसमयअणियट्टिस्स ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७२ ॥

जाकर उत्पन्न हुई है ।

शंका—यह जघन्य परिहारशुद्धिसंयमलब्धि किसके होती है ?

समाधान—उक्त लब्धि सर्वसंक्लिष्ट सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमके अभिमुख हुए अन्तिमसमयवर्ती परिहारशुद्धिसंयतके होती है ।

उसी परिहारशुद्धिसंयतकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १७० ॥

क्योंकि, उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थान ऊपर जाकर है ।

सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १७१ ॥

क्योंकि, उससे ऊपर असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थान जाकर सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयमकी उत्कृष्ट लब्धिकी उत्पत्ति होती है ।

शंका—यह लब्धि किसके होती है ?

समाधान—अन्तिमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरणके होती है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमकी जघन्य चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १७२ ॥

---

१ अ. आ. प्रत्योः संजमस्स इति पाठः ।

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूणुप्पत्तीदो। एसा कस्स होदि ? उवसमसेडीदो ओयरमाणचरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स।

तस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७३ ॥

कुदो ? अणंतगुणाए सेडीए जहण्णादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूणुप्पत्तीदो। एसा कस्स होदि ? चरिमसमयसुहुमसांपराइयखवगस्स।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदस्स अजहण्णअणुक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७४ ॥

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूण समुप्पत्तीदो। किमट्ठमेसा लद्धी एयवियप्पा ? कसायाभावेण वड्ढि-हाणिकारणाभावादो। तेणेव कारणेण अजहण्णा अणुक्कस्सा च। एत्थ केण कारणेण संजमलद्धिट्ठाणप्पाबहुअं भणिदं ? वुच्चदे--

---

क्योंकि, उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकप्रमाण छह स्थानोंका अन्तर करके है।

शंका—यह किसके होती है ?

समाधान—उपशमश्रेणीसे उतरनेवाले अन्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है।

उसीके सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयमकी उत्कृष्ट चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १७३ ॥

क्योंकि, जघन्यके ऊपर अनन्तगुणित श्रेणीरूपसे अन्तर्मुहूर्त जाकर उसकी उत्पत्ति होती है।

शंका—यह किसके होती है ?

समाधान—यह अन्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होती है।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतकी जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित चरित्रलब्धि अनन्तगुणी है ॥ १७४ ॥

क्योंकि, असंख्यात लोकमात्र छह स्थानोंका अन्तर करके उसकी उत्पत्ति होती है।

शंका—यह लब्धि एक विकल्परूप क्यों है ?

समाधान—क्योंकि, कषायका अभाव हो जानेसे उसकी वृद्धि और हानिके कारणोंका अभाव हो गया है। इसी कारण वह जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे रहित है।

शंका—यहां किस कारणसे संयमलब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा गया है ?

संजदाणं जीवप्पाबहुगसाहणट्ठमागदं। जस्स संजमस्स लद्धिट्ठाणाणि बहुआणि तत्थ जीवा वि बहुआ चेव, जत्थ थोवाणि तत्थ थोवा चेव होंति त्ति। जदि एवं[1] जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं सव्वत्थोवत्तं पसज्जदे, णिव्वियप्पेगसंजमलद्धिट्ठाणत्तादो? ण एस दोसो, अद्धमस्सिदूण तेसिं बहुत्तुवदेसादो।

दंसणाणुवादेण सव्वत्थोवा ओहिदंसणी ॥ १७५ ॥

कुदो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तादो।

चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा ॥ १७६ ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ। कुदो? असंखेज्जपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो।

केवलदंसणी अणंतगुणा ॥ १७७ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो। कुदो? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेणो-

---

समाधान—इस शंकाका उत्तर कहते हैं। संयत जीवोंके अल्पबहुत्वके साधनार्थ उक्त लब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व प्राप्त हुआ है। जिस संयमके लब्धिस्थान बहुत हैं उसमें जीव भी बहुत ही हैं, तथा जिस संयमके लब्धिस्थान थोडे हैं उसमें जीव भी थोडे ही हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंके सबसे थोडे होनेका प्रसंग आता है, क्योंकि, उनके निर्विकल्प एक संयमलब्धिस्थान है।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कालका आश्रय करके उनके बहुत होनेका उपदेश दिया गया है। अर्थात् उनका काल आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। इस अपेक्षासे यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंको सबसे अधिक एकता है।

दर्शनमार्गणाके अनुसार अवधिदर्शनी सबमें स्तोक हैं ॥ १७५ ॥

क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणे हैं ॥ १७६ ॥

गुणकार जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात जगश्रेणियोंके बराबर है, क्योंकि, वह असंख्यात प्रतरांगुलोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है।

केवलदर्शनी अनन्तगुणे हैं ॥ १७७ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह जगप्रतरके

---

१ अ. आ. क. प्रतिषु (जो) इति पाठो नास्ति

वट्टिदसिद्धप्पमाणत्तादो ।

अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥ १७८ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

लेस्साणुवादेण सव्वत्थोवा सुक्कलेस्सिया ॥ १७९ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो । तं पि कुदो ? सुट्ठु सुभलेस्साणं समवाएण कत्थ वि केसिं पि संभवादो ।

पम्मलेस्सिया असंखेज्जगुणा ॥ १८० ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

तेउलेस्सिया संखेज्जगुणा ॥ १८१ ॥

असंख्यात भागसे अपवर्तित सिद्धोंके बराबर हैं ।

केवलदर्शनियोंसे अचक्षुदर्शनी अनन्तगुणे हैं ॥ १७८ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिकों, सिद्धों तथा सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

लेश्यामार्गणाके अनुसार शुक्ललेश्यावाले सबमें स्तोक हैं ॥ १७९ ॥

क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

शंका—वह भी कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अतिशय शुभ लेश्याओंका समवाय अर्थात् सम्बन्ध कहींपर किन्हींके सम्भव है ।

शुक्ललेश्यावालोंसे पद्मलेश्यावाले असंख्यातगुणे हैं ॥ १८० ॥

गुणकार जगप्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात जगश्रेणियोंके बराबर है। क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित प्रतरांगुलसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है ।

पद्मलेश्यावालोंसे तेजोलेश्यावाले संख्यातगुणे हैं ॥ १८१ ॥

कुदो? पंचिदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागेण पम्मलेस्सियदव्वेण तेउलेस्सियदव्वे भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

अलेस्सिया अणंतगुणा ॥ १८२ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

काउलेस्सिया अणंतगुणा ॥ १८३ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

णीललेस्सिया विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

केत्तियो विसेसो ? अणंतो काउलेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

किण्णलेस्सिया विसेसाहिया ॥ १८५ ॥

केत्तिय विसेसो ? अणंतो णीललेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनियोंके संख्यातवें भागप्रमाण पद्मलेश्यावालोंके द्रव्यका तेजोलेश्यावालोंके द्रव्यमें भाग देनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं ।

तेजोलेश्यावालोंसे लेश्यारहित अर्थात् अयोगी व सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १८२ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

अलेश्यिकोंसे कापोतलेश्यावाले अनन्तगुणे हैं ॥ १८३ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिकोंसे, सिद्धोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

कापोतलेश्यावालोंसे नीललेश्यावाले विशेष अधिक हैं ॥ १८४ ॥

विशेष कितना है ? कापोतलेश्यावालोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो अनन्त है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

नीललेश्यावालोंसे कृष्णलेश्यावाले विशेष अधिक हैं ॥ १८५ ॥

विशेष कितना है ? विशेष अनन्त है जो नीललेश्यावालोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

भवियाणुवादेण सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया ॥ १८६ ॥

कुदो ? जहण्णजुत्ताणंतप्पमाणत्तादो ।

णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ १८७ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ १८८ ॥

सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण सव्वत्थोवा सम्मामिच्छाइट्ठी ॥ १८९ ॥

सासणसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा त्ति किण्ण परूविदं ? ण, विवरीयाहिणिवेसेण[1] तेसिं समाणत्तं पडुच्च मिच्छाइट्ठीणमंतब्भावादो, भूवपुव्वियं णयं पडुच्च सम्माइट्ठीणमंतब्भावादो वा । सेसं सुगमं ।

सम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९० ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं सुगमं ।

भव्यमार्गणाके अनुसार अभव्यसिद्धिक जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १८६ ॥

क्योंकि, वे जघन्य युक्तानन्तप्रमाण हैं ।

अभव्यसिद्धिकोंसे न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक ऐसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १८७ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिकोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

उक्त जीवोंसे भव्यसिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १८८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुसार सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव सबमें स्तोक हैं ॥ १८९ ॥

शंका—सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं, ऐसा क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, विपरीताभिनिवेशकी अपेक्षा समानताके प्रति उनका मिथ्यादृष्टियोंमें अन्तर्भाव हो जाता है, अथवा भूतपूर्व नयका आश्रयकर सम्यग्दृष्टियोंमें उनका अन्तर्भाव हो जाता है । इसलिये यहां सासादनसम्यग्दृष्टियोंको सबसे स्तोक नहीं कहा । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे सम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात गुणे हैं ॥ १९० ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । कारण सुगम है ।

---

१ अ. प्रती विपरीताभिनिवेशे इति पाठः ।

सिद्धा अणंतगुणा ॥ १९१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ॥ १९२ ॥

एदं पि सुगमं । अण्णेण पयारेण सम्मत्तप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा सासणसम्माइट्ठी ॥ १९३ ॥

सुगमं ।

सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १९४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उवसमसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सम्यग्दृष्टियोंसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है । अन्य प्रकारसे सम्यक्त्वमार्गणामें अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टि सबमें स्तोक हैं ॥ १९३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यातगुणे हैं ॥ १९४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ॥ १९५ ॥

गुणकार क्या है । आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ॥ १९६ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

वेदगसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो[1] ।

सम्माइट्ठी विसेसाहिया ॥ १९८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? उवसम-खइयसम्माइट्ठिमेत्तो ।

सिद्धा अणंतगुणा ॥ १९९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी[2] अणंतगुणा ॥ २०० ॥

सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सव्वत्थोवा सण्णी ॥ २०१ ॥

कुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

णेव सण्णी णेव असण्णी अणंतगुणा ॥ २०२ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

असण्णी अणंतगुणा ॥ २०३ ॥

सुगमं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं ॥ १९७ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्दृष्टि विशेष अधिक हैं ॥ १९८ ॥

विशेष कितना है ? उपशमसम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि दोनोंके बराबर है ।

सम्यग्दृष्टियोंसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं ॥ १९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं ॥ २०० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञिमार्गणाके अनुसार संज्ञी जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २०१ ॥

क्योंकि, वे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

संज्ञी जीवोंसे न संज्ञी न असंज्ञी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०२ ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

उक्त जीवोंसे असंज्ञी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ अ-काप्रत्योः -भागो इति पाठः ।   २ अ-काप्रत्योः मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ॥ २०० ॥ सुगमं । इतिपाठो नास्ति । अतः अयं सूत्रस्य संशोधनकारेण मुद्रित संस्थायां न्यूनतमो पाठः ।

आहाराणुवादेण सव्वत्थोवा अणाहारा अबंधा ॥ २०४ ॥

कुदो ? सिद्धाजोगीणं गहणादो ।

बंधा अणंतगुणा ॥ २०५ ॥

गुणगारो अणंताणि सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागस्स अणंतभागत्तादो ।

आहारा असंखेज्जगुणा ॥ २०६ ॥

गुणगारो अंतोमुहुत्तं । कुदो ? बंधगअणाहारदव्वेण आहारदव्वे भागे हिदे अंतोमुहुत्तुवलंभादो ।

एवमप्पाबहुगेत्ति समत्तमणिओगद्दारं[1] ।

आहारमार्गणाके अनुसार अनाहारक अबन्धक जीव सबसे स्तोक हैं ॥२०४॥

क्योंकि, यहां सिद्धों और अयोगी जीवोंका ग्रहण किया गया है ।

अनाहारक अबन्धकोंसे अनाहारक बंधक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०५ ॥

गुणकार सर्व जीवोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, क्योंकि, वह सर्व जीवोंके असंख्यातवें भागके अनन्तभागरूप है । अर्थात् अनाहारक बंधक जीव सर्व जीव राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और अनाहारक अबंधक अनन्तवें भागप्रमाण हैं । अतएव उन दोनोंके बीच गुणकारका प्रमाण अनन्त होगा ही ।

अनाहारक बंधकोंसे आहारक जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २०६ ॥

गुणकार अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, बन्धक अनाहारक द्रव्यका आहारक द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तर्मुहूर्त उपलब्ध होता है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

१ मु. प्रतौ एवमप्पाबहुगेत्ति इति पाठः ।